B.A Part-1 Paper-1 **Topic-Determinants of Personality**
Dr. Prabha Shree (Guest Faculty, Deptt of Psychology, Vaishali Mahila College Hajipur)

व्यक्तित्व के निर्धारक

व्यक्तित्व के निर्धारक से तात्पर्य कुछ वैसे कारको से होता है जिससे व्यक्ति का विकास प्रभावित होता है। मनोवैज्ञानिकों ने इस तरह के कारकों को दो भागों में बांटा है कुछ कारक ऐसे हैं जिनका संबंध व्यक्ति के अनुवांशिकता या जैविक प्रक्रियाओं से होता है इस तरह के कारक को जैविक कारक कहा जाता है कुछ कारक ऐसे हैं जिसका संबंध व्यक्ति के वातावरण से होता है इन्हें पर्यावरणी कारक कहा जाता है। जन्म के

बाद व्यक्ति किसी समाज या संस्कृति के वातावरण में पाला-पोषा जाता है अतः वातावरण से संबंधित भी कुछ ऐसे कारक होते हैं जो व्यक्ति के विकास को प्रभावित करते हैं।

जैविक कारक- जैविक कारक से तात्पर्य वैसे कार को से होता है जो अनुवांशिक होते हैं तथा जो जन्म या जन्म के पहले ही व्यक्ति में मौजूद होते हैं और व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करते हैं ऐसे प्रमुख कारक निम्नांकित है-

- शारीरिक संरचना तथा शारीरिक स्वास्थ्य
- शारीरिक रसायन एवं अंतः स्रावी ग्रंथियां

- स्नायु मंडल

पर्यावरणी कारक- व्यक्तित्व का विकास सिर्फ जैविक कारकों या अनुवांशिक कारकों द्वारा ही प्रभावित नहीं होता है बल्कि वातावरण या पर्यावरण से संबंधित कारकों द्वारा भी प्रभावित होता है। सचमुच में जैविक कारकों द्वारा व्यक्तित्व के विकास के लिए एक boundary wall कायम किया जाता है और उसके भीतर व्यक्तित्व का विकास पर्यावरणीय कारकों द्वारा ही होता है। मनोवैज्ञानिकों ने पर्यावरणी कारकों को मुख्यतः निम्नांकित तीन भागों में बांटा है-

- सामाजिक कारक

- सांस्कृतिक कारक
- आर्थिक कारक

व्यक्तित्व के निर्धारण में इन दोनों कारकों का संयुक्त प्रभाव पड़ता है व्यक्तित्व जैसा भी हो, वह इन दोनों कारकों के अंतः क्रिया का परिणाम होता है। अकेले कोई एक कारक उतना महत्वपूर्ण नहीं होता है।